

# वैश्विक परिदृश्य के साहित्यिक जगत में जनसंचार की भूमिका

Shodh Siddhi

A Multidisciplinary & Multilingual Double Blind Peer Reviewed International Research Journal  
Volume: 02 | Issue: 01 [January to March : 2026], pp. 60-63



**प्रो. इसाबेला लकड़ा**

प्राध्यापक (हिन्दी)

शासकीय माता शबरी कन्या स्नातकोत्तर  
महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)



**प्रो. हीरालाल शर्मा**

निदेशक

पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय  
बिलासपुर (छ.ग.)

## Abstract

वैश्विक परिदृश्य में जनसंचार माध्यमों से सम्पूर्ण दुनिया के लगभग सभी विकसित और विकासशील देशों में पढ़ा जाता है। यह कार्य इतनी पूर्णता और तीव्रता से किया जाता है कि एक सदी पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। एक समाचार पत्र का कार्य केवल समाचारों को शीघ्रता से छापकर लोगों तक पहुँचाना ही नहीं था। बल्कि इसके अतिरिक्त, दैनिक समाचार पत्र की भूमिका उस समाज के बदलते स्वरूप का यथार्थ चित्रण को विश्वसनीय तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए आज हम किसी भी आधुनिक समाज या शहर की कल्पना समाचार पत्रों के बिना नहीं कर सकते। समाचार पत्र किसी समुदाय का निर्माण नहीं करते, लेकिन वे निश्चित रूप से उसे परिभाषित करने और उसकी एकता बनाए रखने में मदद करते हैं। वे सामान्य हितों या व्यवहारों को बढ़ावा देते हैं, विशेषकर उन समाजों में जहाँ एक ही समाचार पत्र व्यापक रूप से पढ़ा जाता है। इसी प्रकार, एक स्थानीय समाचार पत्र किसी नगर या जिले की पहचान और अपनत्व की भावना को बनाए रखने में सहायता करता है। यह लोगों को राष्ट्र-निर्माण के प्रयासों में भाग लेने में भी मदद करता है। जनसंचार एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा संगठित गतिविधि के माध्यम से तथ्यों, सूचनाओं, विचारों, विकल्पों और निर्णयों का आदान-प्रदान दो या अधिक पेशेवर इकाइयों के बीच होता है।

**Keywords:** आधुनिक, एकता, समाज, पेशेवर, व्यवहार एवं पत्र आदि।

### शोध प्रविधि :-

इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। इससे साथ-साथ जनसंचार की साहित्य में भूमिका को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

### समस्या :-

वैश्विक स्तर पर दिनांदिन यथार्थता में गिराबट देखने की मिलती है। यह अभियान हिंदी पढ़ाने के स्थान पर अंग्रेज़ी पढ़ाने की ओर स्थानांतरित होता जा रहा है। आधुनिकता की चकाचौधभरी दुनिया में अंग्रेज़ी की होड़ सी

लग गई है। यह साहित्य जगत् की सबसे बड़ी समस्या है। जब एक बच्चा पहली कक्षा से ही यह सीखता है कि रोमन लिपि आसान है और देवनागरी कठिन है, तो वह पीढ़ी रोमन को श्रेष्ठ मानेगी और उसे स्थायी रूप से अपना लेगी। यही वैश्वीकरण के दौर में हिंदी के सामने खड़ी सबसे बड़ी चुनौती है।

### उद्देश्य :-

भाषा में संदेशों का उद्देश्यपरक संप्रेषण हिंदी भाषा में कार्यात्मकता की शक्ति को विस्तारित करता है। इसके मुख्य रूप से कई बिन्दु हैं। यही कारण है कि मीडिया की प्रभावशीलता के कारण इसके प्रति कुछ स्तर तक विरोध भी देखा जाता है। वैश्वीकरण के इस युग में बार-बार यह प्रचारित किया जा रहा है कि हिंदी पढ़कर प्रगति नहीं की जा सकती। इसलिए प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सबके लिए शिक्षा अभियान, जो विदेशी वित्त पोषण से शुरू किया गया था, में सबके लिए अंग्रेज़ी की एक अंतर्निहित शर्त थी, अर्थात् अंग्रेज़ी शिक्षा की शुरुआत की जाए। संदेशों का आदान-प्रदान सभी भाषाओं में हो सकता है लिखित, मौखिक या सांकेतिक। इसके माध्यमों में विज्ञापन, रेडियो, टेलीविजन, समाचार, ईमेल आदि शामिल हैं। इसलिए संचार पूरे समाज को प्रभावित करता है और लाभ पहुँचाता है।

### समाधान :-

जनसंचार एक शक्तिशाली माध्यम है, जो शासन के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि व्यावसायिक संस्थानों में भी योजनाओं, कार्यक्रमों या अभियानों के माध्यम से जनमत को प्रभावित करके या किसी विशेष उत्पाद के चारों ओर वातावरण बनाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनसंचार के माध्यम से हमारे देश में सूचना और प्रसार को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप व्यवस्थित, परिष्कृत और प्रासंगिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जनसंचार मुख्य रूप से जनसंपर्क के माध्यम से सार्थक बनता है। इसका मुख्य कार्य प्राधिकरण या संस्थानों से संबंधित समाचारों को प्रकाशित करना या उनकी योजनाओं और नीतियों के अनुरूप किए गए कार्यों को प्रस्तुत करना है। जनसंपर्क के मुख्य कार्यों में सूचना और प्रचार के अतिरिक्त रेडियो, टेलीविजन, फिल्में, प्रदर्शनियाँ और प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन शामिल है। भाषा के माध्यम से जनसंचार इतना प्रभावी बनाया जाता है कि वह सरल और व्यवस्थित ढंग से आम जनता तक पहुँचकर लाभकारी सिद्ध होता है। संचार एक सरल प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विशिष्ट जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इसके द्वारा व्यक्तियों, समूहों और सूचनाओं का प्रवाह मुख्य विभागों से उप-विभागों तक होता है, जिसमें वर्तमान और भूतकालीन दोनों प्रकार की सूचनाएँ शामिल होती हैं। वरिष्ठों और अधीनस्थों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध केवल प्रभावी और सार्थक संचार के माध्यम से ही स्थापित किए जा सकते हैं। संचार का स्वरूप संदेशों के आदान-प्रदान और पारस्परिक संबंधों पर आधारित होता है। संचार लिखित, मौखिक, प्रदर्शनात्मक और दृश्य माध्यमों के द्वारा किया जा सकता है।

जहाँ कहीं भी मनुष्य निवास करता है, वह एक समाज का निर्माण करता है। वह अपने आसपास के वातावरण से जुड़ा होता है, और इन संबंधों के माध्यम से उसे सामाजिक प्राणी कहा जाता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य भाषिक संकेतों का उपयोग करता है, और जब ये संकेत किसी विशेष क्षेत्र के लोगों के बीच संप्रेषण और अभिव्यक्ति का मानकीकृत रूप ले लेते हैं, तो वे पूर्ण रूप से भाषा का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, फिर भी वे एक-दूसरे से अपरिचित नहीं हैं। जैसे व्यक्तियों के बीच संबंध होते हैं, वैसे ही भाषाओं के बीच भी किसी न किसी रूप में संबंध होते हैं। जब कोई भाषा जनसंचार की भाषा बन जाती है, तो हमारी सभी गतिविधियाँ उसी भाषा के माध्यम से संचालित होने लगती हैं। जैसे ही मनुष्य का जन्म होता है, आवश्यकताओं की श्रृंखला प्रारंभ हो जाती है और यह प्रक्रिया मृत्यु के बाद तक भी जारी रहती है। मूलभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ मनुष्य अपने विचारों, खुशियों और दुखों को किसी माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास करता है, और इस अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम आवश्यक होता है। यद्यपि संप्रेषण के माध्यमों की कभी कमी नहीं रही, न ही उनके विभिन्न रूपों से हम अनभिज्ञ रहे हैं। लोक व्यवहार, लोक अभिव्यक्ति और विभिन्न मनोरंजन के साधन इसमें प्रमुख रूप से शामिल हैं। रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, समाचार और पत्रिकाओं जैसे

विभिन्न माध्यमों के जरिए हिंदी का जागृत रूप लोगों तक पहुँचा है। मनुष्य ने इसे केवल औपचारिक ही नहीं बल्कि अनौपचारिक रूप से भी अपनाया है, और संचार माध्यमों के माध्यम से यह न केवल हमारे लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है बल्कि नई-नई चीजों की खोज के लिए प्रेरित भी किया है, जिससे मानव की खुशी में वृद्धि हुई है। स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की स्थापना हुई। हमारी पहली आवश्यकता सरकार को जनता से जोड़ने की थी। इस जुड़ाव के लिए जो भाषा जनता तक पहुँचने के लिए आवश्यक थी, वह हिंदी थी, क्योंकि इसने सदियों तक राष्ट्रीय एकता बनाए रखी थी और विदेशियों द्वारा भी इसका उपयोग किया जाता था। इसलिए हिंदी स्वाभाविक रूप से जनसंचार की भाषा बनती चली आई है।

प्रशासन द्वारा संचालित अभियानों के माध्यम से सरकारी विभागों में हिंदी में कार्य करने पर लगातार जोर दिया गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हिंदी को लोगों पर जबरदस्ती थोपा जा रहा है, बल्कि हिंदी में निहित मधुरता, सौंदर्य और सरसता अभी तक संचार माध्यमों में पूरी तरह से समाहित नहीं हुई थी। पहले कई बातें केवल पुस्तकों के माध्यम से ही जानी जा सकती थीं, लेकिन संचार माध्यमों में हिंदी के बढ़ते उपयोग से लोग साक्षरता, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और कृषि से संबंधित उन्नत जानकारी अपनी मातृभाषा में प्राप्त कर रहे हैं। अब हिंदी का उपयोग कंप्यूटर प्रणाली और उपग्रह विस्तार जैसी नई तकनीकों में भी किया जा रहा है और इसका निरंतर प्रसार हो रहा है। आधुनिक संचार साधन विश्व के कल्याण और उपलब्धियों की जानकारी केवल हर सुबह ही नहीं बल्कि हर क्षण प्रदान करते हैं। संचार माध्यमों में विशेष स्थान है। सावधानीपूर्वक चुने गए हिंदी शब्दों का इस प्रकार उपयोग किया जाता है कि दर्शक आकर्षित हो जाते हैं, और बच्चे भी उनके नारों को गुनगुनाने और गाने लगते हैं, जो संप्रेषण के साधन बन गए हैं। इस प्रकार विभिन्न संचार माध्यमों के माध्यम से हिंदी की स्थिति में जो सुधार हुआ है, वह काफी हद तक इन्हीं माध्यमों के कारण है, क्योंकि ये सरल, रोचक, उपयोगी और ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान करते हैं, जिससे मानवता विकास के मार्ग पर अग्रसर होती है।

संचार एक उपकरण के रूप में कार्य करता है ताकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा किया जा सके। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त अठारह भाषाओं के नाम दिए गए हैं। इन भाषाई क्षेत्रों में, मोबाइल टेलीफोन उद्योग का सतत विकास भारतीय दूरसंचार की एक अत्यंत सफल कहानी है। संचार केवल व्यावसायिक संस्थाओं में ही नहीं होता; बल्कि यह प्रक्रिया समाज के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनाई जाती है। 1997 में, इसके केवल तीन मिलियन ग्राहक थे। ग्यारहवें योजना की समाप्ति तक, सरकार ने दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा वायरलेस ग्राहक आधार स्थापित कर लिया था।

भारत में मोबाइल बाजार की तेजी से वृद्धि के कई कारण हो सकते हैं। हालांकि, सबसे महत्वपूर्ण कारण निजी क्षेत्र के ऑपरेटर कंपनियों के लिए बाजार खोलने के लिए कानूनी कार्रवाई है। परिवहन के तेजी से विकास के साथ, राष्ट्रीय समाचार पत्र दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचने लगे। शासकों ने समाचार पत्रों पर कड़ी निगरानी शुरू की। वे तथ्य जिन्हें सरकार छिपाना चाहती थी और नहीं चाहती थी कि समाचार पत्र प्रकाशित करें, स्वतंत्र और निष्पक्ष समाचार पत्रों को पक्षपाती दृष्टि से देखा गया। यहां तक कि गैर-तानाशाही सरकारों का यह मानना था कि केवल कुछ शिक्षित लोग ही सार्वजनिक मामलों में शामिल होने चाहिए। वैश्वीकरण के इस युग में, जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त भाषा इसके कार्य और उपयोग के तरीकों के बारे में चर्चाएँ तेजी पकड़ रही हैं। तकनीकी मीडिया के संदर्भ में, यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भाषा वह सेतु है जिसके माध्यम से विभिन्न वास्तविकताओं को समझाया जा सकता है। इस संबंध में, वर्तमान शोध पत्र दो बिंदुओं को उजागर करने का प्रयास करता है जो विशेष रूप से हिंदी के संदर्भ में तकनीकी मीडिया की रोशनी में भाषा के वैश्विक परिदृश्य पर विचारात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं, भाषा सबसे शक्तिशाली अभिव्यक्ति का रूप है। संचार भाषा और इस प्रकार के संचार के लिए, शब्द "प्रभाव" को बोल्ट अक्षरों में प्रस्तुत किया गया है।

**निष्कर्ष :-**

जनसंचार माध्यमों की मौखिक प्रकृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनसंचार में प्रयुक्त भाषा के प्रभाव के मूल्यांकन और उपयोग, विशेष रूप से हिंदी के दृष्टिकोण से, हमें दो विपरीत दिशाओं में ले जाता है। एक तो हिंदी की उपयोगिता और दूसरा इसका प्रभावशालीपन। भाषाई दृष्टि से ये दोनों अवधारणाएँ विरोधाभासी प्रतीत होती हैं। उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित करने से प्रभावशालीपन कम हो जाता है, लेकिन क्योंकि संचार माध्यम की भाषा प्रभाव-उन्मुख होती है, यह अक्सर प्रायोगिकता को काफी हद तक नजरअंदाज कर देती है। जनसंचार एक सशक्त माध्यम है यह केवल व्यावसायिक संस्थाओं में ही नहीं होता; बल्कि यह प्रक्रिया समाज के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनाई जाती है। संचार प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं पूर्ति करने वाला एक उपकरण है और इसलिए पूरे समाज को प्रभावित और लाभ पहुंचाता है। इसलिए इसे सामाजिक प्रक्रिया भी कहा जाता है।

**References-**

1. प्रो. राम लखन मीना, सामाजिक मीडिया विमर्श, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ 33
2. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, आरोड़ा आफसेट प्रेस, लक्ष्मी नगर दिल्ली, सन् 1996, पृष्ठ 45
3. प्रो. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला, प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृष्ठ 56
4. डॉ. आलोक रंजन पाण्डेय, जनसंचार और रचनात्मक लेखन, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2023, पृष्ठ 24-28

